ओ३म्

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

अप्रैल 2017 (प्रथम)

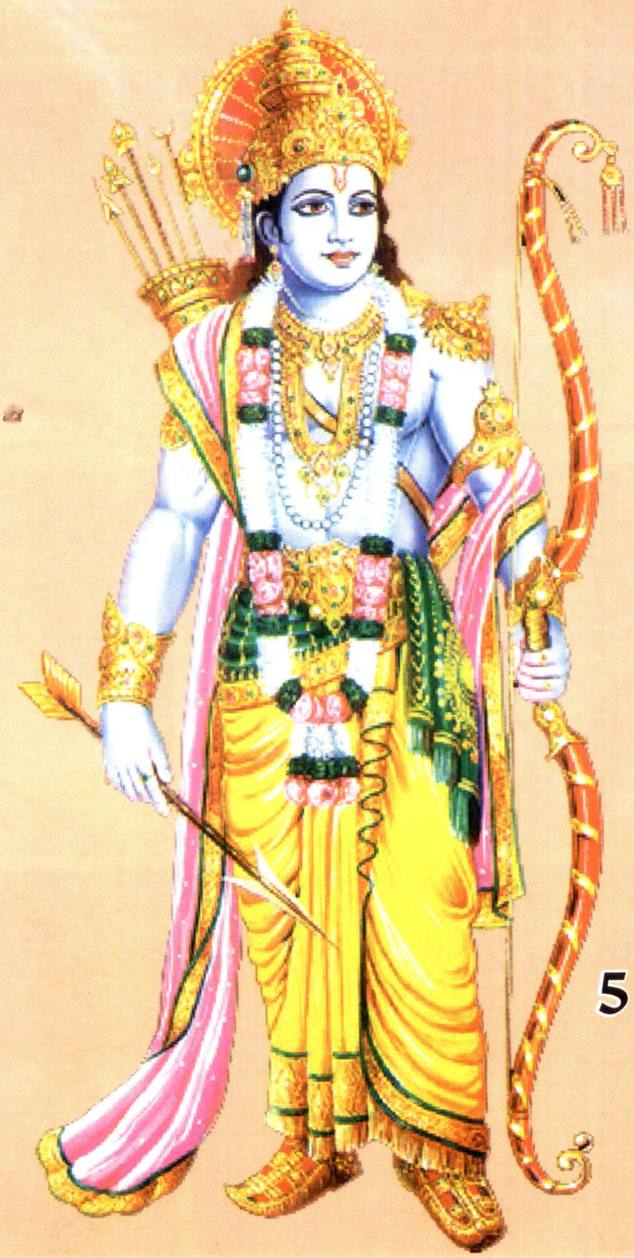

रामनवमी

5 अप्रैल 2017

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

गोरक्षक चिन्तन शिविर में अपने विचार रखते हुए वक्ता

श्री ओमप्रकाश धनखड़ (कृषिमंत्री हरियाणा सरकार)

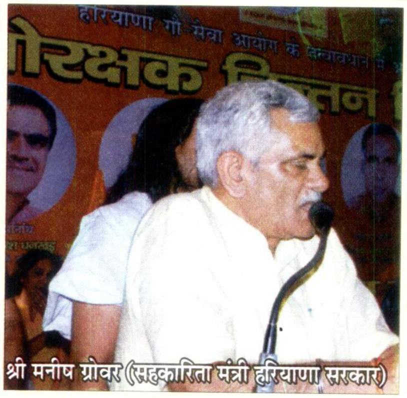
श्री मनीष ग्रोवर (सहकारिता मंत्री हरियाणा सरकार)

श्री भानीराम मंगला (चेयरमैन हरियाणा गोसेवा आयोग)

मा० रामपाल आर्य (सभा प्रधान)

आचार्य योगेन्द्र आर्य (सभा मंत्री)

श्री ऋषिप्रकाश शर्मा

श्री हरिओम तायल

आचार्य सर्वमित्र आर्य (सभा प्रस्तोता)

आचार्य कर्मवीर मेधार्थी (वेदप्रचाराधिष्ठाता)

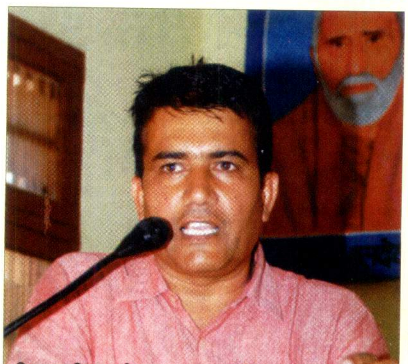
श्री कुलवीर खर्ब

श्रीमती सोनिया दिल्ली

डा० अर्चना गुप्ता (अध्यक्ष महिला मोर्चा भाजपा पानीपत)

समय लगाओ, सफलता पाओ।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख पत्रिका

वर्ष 13 अंक 5

सम्पादक :
आचार्य योगेन्द्र आर्य

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल
1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

ओ३म्

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

अप्रैल, 2017 (प्रथम)
1 से 15 अप्रैल, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—राम व रामनवमी हमारे लिए जरूरी क्यों? 2
2. अध्यापकों व विद्यार्थियों से 3
3. शहीदे आज़म पण्डित श्री लेखराम जी- आर्य मुसाफिर-तुम्हें शत-शत नमन 4
4. वाणी का महत्त्व 6
3. आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य 7
4. राम बनो असुरों को मारो 8
7. आर्यसमाज के समर्पित आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक दिवंगत 13
8. दुरितों के त्रिविध रूप एवं दुरितों से बचने के उपाय 14
9. महात्मा हंसराज के स्वयंसेवक आर्यवीरों की कहानी 15
10. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बड़ी सफलता 16
11. समाचार-प्रभाग 17

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
aryasabhaharyana@gmail.com

राम व रामनवमी हमारे लिए जरूरी क्यों?

❑ आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

भारतीय इतिहास में अनेक महापुरुष हुये हैं जो हमारी जीवन शैली को एक आदर्श के रूप में रखने के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करते हैं। हमारा इतिहास परम्पराओं को अपने जीवनमूल्यों के साथ जोड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इसी ऐतिहासिक श्रृंखला में हमारे लिए एक प्रेरणादायक जीवन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज हैं, जिनकी पिछले दिनों भारतवर्ष में जयन्ती भी मनाई गई थी या यों कहें कि रामनवमी का पर्व मनाया गया था। यदि इन घनघोरी अंधियारी रात्रि में जगद्वन्द्व श्रीराम के आदर्श जीवन की जाज्वल्यमान शीतल किरणावली का प्रकाश-प्रसार न पाता तो भारतीय यात्री का कहीं ठिकाना न था। इस सूचिभेद्य अन्धकार में उनको न जाने कहां से कहां भटकना पड़ता। इस समय भारत के श्रृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक अन्य राष्ट्रों के समक्ष ऊँचा उठाकर चल सकते हैं तो महात्मा श्रीराम के आदर्श चरित की विद्यमानता है। हमें प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव प्राप्त है तो वह भी सूर्यकुल-कमल दिवाकर श्रीराम की अनुकरणीय पावन जीवनी के कारण है।

श्रीराम के साथ एक विशेषण लगता है-मर्यादा। मर्यादा परिधि या सीमा को कहते हैं। जैसे किसी देश, राज्य, क्षेत्र, ग्राम की सीमा होती है। जैसे लोकव्यवहार में हम सीमाबद्ध होकर अपने कार्यों को करते हैं, वैसे ही परमात्मा ने भी मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए मर्यादायें बांधी हैं।

सप्तमर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यहुंरोगात्।
आर्योर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धनुषेण तस्थौ॥

मनीषी जनों ने सात मर्यादाएं निर्धारित की हैं, इनमें से एक का भी यदि कोई मनुष्य उल्लंघन करता है तो वह पापी होता है। महर्षि यास्क ने निरुक्त में इन सात मर्यादाओं के नाम गिनाये हैं—(1) चोरी करना, (2) परस्त्रीगमन, (3) ब्रह्महत्या, (4) भ्रूणहत्या (गर्भपात), (5) मद्यपान, (6) किसी बुरे काम को बार-बार करना। (7) पाप को छिपाने के लिए झूठ बोलना।

इन मर्यादाओं का पूर्णतः पालन वही कर सकता है जो जितेन्द्रिय हो और ईश्वर को अपने जीवन का आधार मानकर चलता है। श्री रामचन्द्र जी ने अपने जीवन में अनेक मर्यादाओं का पालन किया जो हमारे भारतीयों के लिए अनिवार्य है—

(1) मर्यादाओं के संस्थापक राम, (2) धर्म के रक्षक राम, (3) शाकाहारी राम, (4) सत्यप्रतिज्ञ राम, (5) पत्नीव्रत राम, (6) पितृ आज्ञापालक राम। हम पुरुषोत्तम राम की मर्यादाओं का कुछ चिन्तन करते हैं—

(1) मर्यादाओं के संस्थापक राम-रामो भामिनि लोकस्य चातुर्वर्ण्यस्य च रक्षिता। मर्यादानां च लोकस्य कर्त्ता कारयिता च सः। हनुमान् जी की अशोक वाटिका में सीता से भेंट होने पर वे श्रीराम के गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं—हे सीते! श्री रामचन्द्र जी चारों वर्णों के रक्षक, लोक में धर्म की मर्यादाओं को बांधकर उनका पालन करने और कराने वाले स्वयं ही हैं। वे ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित हैं, साधुजनों का उपकार मानने वाले हैं। सत्यधर्म के अनुष्ठान में संलग्न हैं। न्यायोचित धन का संग्रह, प्रजावत्सल और सबको प्रिय वचन बोलने वाले हैं।

(2) धर्म के रक्षक राम-धर्मार्थकामाः खलुजीव-लोके समीक्षिता धर्मफलोदयेषु। ये तत्र सर्वे स्युटसंशयं मे भार्येव वश्यामिमता सपुत्रा। यस्मिंस्तु सर्वे स्युरसंविविष्टा धर्मो यतः स्यात् तदुपक्रमेत्। द्वैष्यो भत्यर्थपरोहि लोके कामात्मता खल्वपि न प्रशस्ता॥ जिस कर्म में धर्म, अर्थ, काम ये तीनों सम्मिलित न हों, परन्तु जिसमें धर्म बनता हो, वही कर्म करना चाहिए। धर्म को छोड़ केवल अर्थसंग्रह करने वाले से लोग द्वेष करने लगते हैं। ऐसे ही केवल कामासक्ति लोक में प्रशंसित नहीं होती।

(3) शाकाहारी राम-न मांसं राघवो भुङ्क्ते न चैव मधु सेवते। वन्यं सुविहितं नित्यं भक्तमश्नाति पञ्चम॥ हे विदेहनन्दिनि! श्रीराम न तो मांस खाते हैं और न ही मद्यपान करते हैं, वे सदा शास्त्रविहित जंगली फल, मूल और नीवार आदि धान्यों का भोजन करते हैं।

(4) सत्यप्रतिज्ञ राम-रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाइ पर वचन न जाई॥ सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः। सत्य मूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परंपदम्॥ जगत् में सत्य ही ईश्वर है। सदा सत्य के आधार

पर धर्म की स्थिति रहती है। सत्य ही सबका मूल है। सत्य से बढ़कर दूसरा कोई परमपद नहीं है।

(5) पत्नीव्रत राम-कर्तुश्चेतसि रामरूपममलं दूर्वादलश्यामलम् तुच्छ ब्रह्मपदं परवधूसंगः प्रसंगः कुतः ॥ अशोक वाटिका में सीता से हनुमान् ने कहा—माता! आप श्रीराम से मिलने को कह रही हो तो मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर श्रीराम से मिलवा देता हूँ। सीता ने कहा-हनुमान्! कोई सती साध्वी स्त्री अपनी इच्छा से परपुरुष का स्पर्श नहीं करती। रावण मुझे अपहरण करके लाया उस समय मैं विवश थी। दूसरी बात यह है कि श्रीराम की वीरता लाञ्छित होगी यही उचित है कि श्रीराम लंका पर चढ़ाई करें और रावण का वध कर मुझे मुक्त करायें।

हम सभी भारतवासियों के लिए ही नहीं अपितु राम का जीवन सम्पूर्ण मानवता के लिए एक आदर्श जीवन है। समाज के बिगड़ते हुए माहौल के लिए माता-पिता, विद्यार्थियों के लिए राम का जीवन चरित्र जीवन में उतारना अनिवार्य है, नहीं तो समाज में जातिवाद, भाई-भाई का वैर, माता-पिता का सम्मान, शिक्षकों का विद्यार्थियों तथा विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति व्यवहार, मूक प्राणियों पर अत्याचार आदि अनेक कुरीतियां बढ़ती जायेंगी इसलिए प्रत्येक विद्यालय में राम का चरित्र अनिवार्य करना चाहिए जिससे हमारी आने वाली संस्कृति वैदिक संस्कृति बन सके।

हम रामनवमी कैसे मनायें? गृह्यकृत्य-प्रातः सामान्य पर्व पद्धति में प्रदर्शित विधानानुसार गृह के परिमार्जन, शोधन, लेपनादि के पश्चात् नवीन शुद्ध स्वदेशीय वस्त्र परिधान पूर्वक सपरिवार सामान्य हवन करना चाहिए। मध्याह्न में स्वसामर्थ्यानुसार सात्त्विक और रोचक पाक सम्पन्न करके सपरिवार प्रीतिपूर्वक एकत्र मिलकर भोजन करें तथा अपने आश्रित सेवकों आदि को भी उससे सत्कृत करें।

सामाजिक कृत्य-अपराह्न वा सायंकाल में स्वसुविधा अनुसार सब मिलकर श्री रामचन्द्र जी की जीवनी का गुणगान करें। फिर सायंकाल कुछ व्यायाम प्रदर्शन व कुश्ती आदि का आयोजन करें। फिर सभी के साथ मिलकर सभी वर्ग के नर-नारी प्रेमपूर्वक भिलनी स्वाद की तरह मिष्ठान्न भोजन आदि करें। तभी हमारा देश वही मर्यादाओं वाला होगा। ऋषियों की परम्परा शुद्ध होगी और चारों तरफ शान्ति ही शान्ति होगी। आओ मिलकर सभी रामराज्य की स्थापना का संकल्प लें और पुण्य के भागी बनें।

अध्यापकों व विद्यार्थियों से!

❑ **प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक**

आदरणीय अध्यापको व प्रिय विद्यार्थियो! शिक्षा का नया सत्र आरम्भ हो चुका है। बड़े सौभाग्यशाली हैं वे जन जो पढ़ने-पढ़ाने का अवसर पाते हैं। विद्या से ही आत्मा संस्कारित होता है। लेकिन वर्तमान में नियमों में बंधकर विद्या पढ़ने-पढ़ाने का प्रचलन नहीं रहा। अतः विद्या भी संस्कारित नहीं कर पा रही। संस्कारविहीन प्रजा के अभाव में यह कैसे सम्भव होगा कि कोई चोर न हो, न कंजूस हो, कोई शराब पीने वाला न हो, सब यज्ञ करने वाले हों, कोई मूर्ख न हो, न कोई व्यभिचारी पुरुष हो और न ही चरित्रहीन स्त्री हो।

यदि आप स्वच्छ समाज का निर्माण करना चाहते हो तो आपको वे नियम अपनाने होंगे जो 'वेद' के आधार पर ऋषियों-मुनियों ने बांध थे। कितना बढ़िया आदर्श था कि अध्यापक विद्यार्थी से पूछता है—'तू कौन है?' विद्यार्थी कहता है—'ब्रह्मचारी।' अध्यापक पूछता है—'किसका?' विद्यार्थी कहता है—'आपका।' आज कौन इस आदर्श को जानता है, कहां ये संवेदनाएं शेष हैं? 'ब्रह्मचर्य' जो आदर्श व्यक्तित्व, स्वस्थ व सभ्य समाज का आधार है, आज कौन अध्यापक इसका उपदेश अपने विद्यार्थियों को देता है? सभी अध्यापकों, विशेषकर मुख्य अध्यापकों, प्राचार्य आदि से प्रार्थना है कि विद्यालय में प्रार्थना समय 'ब्रह्मचर्य' का सन्देश अवश्य देवें। अध्यापक व विद्यार्थी साथ-साथ ब्रह्मचर्य के पालन का संकल्प लेवें। जिस अध्यापक की स्वयं की इन्द्रियां काबू नहीं वह विद्यार्थियों को क्या काबू करेगा? इसीलिए वेद-शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि ब्रह्मचर्य से ही राजा प्रजा की रक्षा करता है व आचार्य विद्यार्थियों के निर्माण की उत्साहपूर्वक इच्छा करता है व उसे पूरा करता है। साथ ही संकल्प लेवें कि हम यथार्थ आचरण धारण करके पढ़ेंगे-पढ़ायेंगे अर्थात् जैसे विद्यालय में सचेत रहते हैं वैसे ही आचरण, खान-पान, व्यवहार के संदर्भ में सर्वत्र सचेत रहें। दण्ड आदि के विषय में भी जो ऋषियों ने सिद्धान्त बनाये हैं उनके बारे में बालकों को यथावत बताएं व अपनाएं। इस प्रकार विद्या पढ़े व पढ़ाएं व सभ्य, सुखी समाज का निर्माण करें।

व्यक्ति उच्च स्तरीय लोगों में, सज्जनों में रहता है तो उसका जीवन अवश्य ऊँचा उठेगा।

शहीदे आज़म पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर - तुम्हें शत-शत नमन

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

पं० लेखराम जी ने राजस्थान में कई आर्यसमाजों की स्थापना की। स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सामग्री एकत्रित की और बूंदी पहुंचकर नित्यानन्द जी और स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी से शास्त्रार्थ करने पहुंचे तो वे दोनों शास्त्रार्थ छोड़कर दौड़ गये। जहाजपुर में पण्डित जी के व्याख्यानों की धूम मच गई। वहाँ उपस्थित एक मुसलमान ने कटाक्ष करते हुए कहा, ''ऐसे तीस मार खां थे तो बूंदी से क्यों भाग आये?'' निर्भय आर्यपथिक ने एकदम उत्तर दिया, ''विपक्षी शास्त्रार्थ से भाग गया और हम लौट आये। हम हिजरत करने तो नहीं आये।'' मुसलमान सूबेदार क्रोध में आकर तलवार निकालने लगा। पण्डित जी कहाँ चुप रहने वाले थे। गरजकर बोले, ''मुझे तलवार की धमकी देता है, यदि पठान का पुत्र है तो तलवार निकाल और मजा देख।'' सूबेदार भीगी बिल्ली बनकर बैठा रहा और सभा में उपस्थित किसी अन्य ने चूं तक न की।

बाकीपुर में किसी ने झूठी तार भिजवा दी कि पं० लेखराम जी मारे गये हैं। वहाँ के डॉ० शाह लिखते हैं, ''अपनी मृत्यु का समाचार सुनकर पण्डित जी विचलित नहीं हुए और कहने लगे, ''मन्त्री जी, मृत्यु तो एक दिन अवश्य आनी है, किन्तु सच्चे धर्म के लिए बलिदान होने के बराबर कोई दूसरी मृत्यु नहीं।''‘डर’ नाम का शब्द उनके जीवन के शब्दकोष में कहीं नहीं था।''

अन्तिम समय में भी उन्होंने सहनशीलता एवं निर्भयता का परिचय देते हुए घातक के हाथ से छूरा छीन लिया और पीड़ा को सहन करते हुए मुँह से ‘सी’ या ‘हाय’ तक न की। ‘ओ३म् विश्वानिदेव०’ और गायत्री मन्त्र का उच्चारण अन्तिम समय तक करते रहे। उन्होंने वेदोक्त वह अवस्था प्राप्त कर ली जिसके लिए अन्य लोग प्रार्थना करते हैं—

ओम् अभयं मित्रादभयम् अमित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा: न: सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

एक इच्छा जो पूर्ण न हो सकी-बांकीपुर आर्यसमाज के मंत्री जी ने पण्डित जी से कहा, ''पण्डित जी, आप उर्दू और फारसी के प्रकाण्ड विद्वान् हैं, आप सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद फारसी में क्यों नहीं करते?'' पण्डित जी ने उत्तर दिया, ''मन्त्री जी! मैं ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित्र के लेखन कार्य को सम्पन्न करने के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश का फारसी में अनुवाद भी करना चाहता हूँ तथा वैदिक धर्म के प्रचार हेतु एवं इस्लाम की पोल खोलने के लिए मुख्य मुस्लिम देशों, अफगानिस्तान, प्रशिया, अरब, मिश्र, ईरान, तुर्किस्तान आदि देशों में जाना चाहता हूँ परन्तु दु:ख की बात है कि आर्य मुसाफिर की यह हार्दिक इच्छा पूरी न हो सकी और उनकी जीवनलीला समाप्त हो गई।''

गुरु विरजानन्द एवं स्वामी दयानन्द के जन्मस्थान की खोज-स्वामी विरजानन्द जी एवं स्वामी दयानन्द जी ने अपने तथा अपने जन्म स्थान के बारे में विशेष कुछ नहीं बताया था। ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान एवं वहां के शिव मन्दिर को ढूंढ़ने में उन्होंने सतत प्रयास किया और अन्तत: खोज लिया। आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर के अपने एक अद्वितीय भाषण में (18 अप्रैल, 1896) ऐसी चर्चा की थी कि स्वामी विरजानन्द जी का जन्म करतारपुर जिला जालन्धर के एक गांव में हुआ था।

पण्डित जी ऋषि दयानन्द जी का ऐसा जीवन लिख गये कि आज का कोई भी लेखक आप द्वारा लिखित ऋषि जीवन पढ़े बिना ऋषि पर एक पृष्ठ भी नहीं लिख सकता। आज तक जितने भी ऋषि के जीवन पर ग्रन्थ लिखे गये उनका आधार आपका ही ग्रन्थ है। आपके परिश्रम का कोई लेखा-जोखा नहीं कर सकता। न जाने ऋषि जीवन की कितनी सामग्री आप अपने साथ ले गये। ऋषि जीवन पूरा ही कर रहे थे कि एक क्रूर विश्वासघाती हत्यारे ने तीखी छुरी के वार से आपकी अंतड़ियां ही बाहर निकाल दी। लहू की धार से धरती तो लहूलुहान हुई सो प्यारे ऋषि का जीवन चरित्र भी लहू की छींटों से पवित्र हो गया।

पेशावरी सन्ध्या-एक बार वेदप्रचार हेतु शिकरम पर कहीं जा रहे थे। सायंकाल का समय था। सन्ध्या करने का समय हो गया था। शिकरम से उतरे परन्तु वहाँ जल न मिला तो शिकरम की छत पर चले गये। देर तक नीचे न उतरे तो देखा गया कि वह सन्ध्या कर रहे हैं। सन्ध्या से निवृत्त होकर आये तो साथियों ने कहा, ''हो गई पेशावरी सन्ध्या'' (पेशावरी सन्ध्या से यहाँ बिना आचमन, अंगस्पर्श

आदि से जो सन्ध्या की गई है)। पण्डित जी ने उस समय हृदय को छूने वाला उत्तर देते हुए कहा, ''आचमन करना, अंग स्पर्श करना आदि तो गौणकर्म हैं परन्तु सन्ध्या करना मुख्य कर्म है। क्या मैं गौण कार्य के लिए (संध्या) को छोड़ दूं?'' ऐसे सच्चे व पक्के ईश्वरभक्त थे पण्डित लेखराम जी।

लक्ष्मी देवी से विवाह-ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित्र लिखने और सारे देश में आर्यसमाज का प्रचार करने हेतु आर्य मुसाफिर बन गये थे। समय का चक्र चलता रहा और पण्डित जी के जीवन के 35 वर्ष व्यतीत हो गये। विवाह करने के लिए समय न मिला। ऋषि दयानन्द जी द्वारा निर्धारित 25 वर्ष की सीमा से 10 वर्ष अधिक निकल गये। आपने 36 वर्ष की आयु में एक पहाड़ी कन्या कुमारी लक्ष्मी देवी से वैदिक रीति से विवाह किया।

पण्डित जी को तीन शोक-पण्डित जी को एक वर्ष में तीन शोक हुए। पिताजी की मृत्यु हो गई। वैदिक प्रचार में इतने खो चुके थे कि अन्त्येष्टि के लिए घर भी न पहुँच सके। छोटे भाई के अन्तिम संस्कार पर भी न पहुँच सके। तीसरा था अपने प्यारे पुत्र सुखदेव की मृत्यु जो सवा साल की अल्पायु में चल बसा।

बहू हो तो लक्ष्मी जैसी-विधाता ने पहले तो इकलौता पुत्र छीन लिया और फिर पति शहीद हो गये। अपने पुत्र और पति दोनों को वैदिक आर्य धर्म की सेवा में बलिदान करके लक्ष्मी देवी अपनी सास के पास रावलपिण्डी चली गई।

रावलपिण्डी आर्यसमाज के उत्सव पर वेदप्रचार की अपील की गई तथा व्याख्यान कर्त्ता ने पं० लेखराम जी के बलिदान का चित्रण मार्मिक शब्दों में किया। उस समय लक्ष्मी देवी के पास कुछ और नहीं था। अपने सोने की बालियाँ कानों से उतारकर वेदप्रचार निधि में दे दी। सगे-सम्बन्धियों ने बड़ी ऊट-पटांग बातें की, परन्तु सहनशीलता की मूर्ति ने सब कुछ धैर्य से सुना। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 8 रुपये श्रीमती लक्ष्मी देवी तथा 5 रुपये उसकी सास के लिए कुल मिलाकर 13 रुपये मासिक पेंशन निश्चित की। लक्ष्मी देवी जी ने सभा वालों से कहा, ''आप माता जी के लिए 10 रुपये पेंशन निश्चित करो, मेरे लिए 3 रुपये पर्याप्त है।'' ऐसी बहू कहाँ मिलेगी जो अपनी सास की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकता से बड़ा समझती है।

सर्वं वै पूर्णं स्वाहा-सन् 1902 की बात है, गुरुकुल कांगड़ी का उद्घाटन समारोह था। लक्ष्मी देवी स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुत्री वेदकुमारी को साथ लेकर गुरुकुल पहुंच गई। उनके पास केवल 3000/- रुपये थे और उसमें से 2000/- रुपये गुरुकुल को दान दे दिए। गुरुकुल के उत्सवोपरान्त जब रावलपिण्डी पहुंची तो इतनी बड़ी राशि गुरुकुल को दान देने पर घरवालों ने बड़ी फटकार लगाई। शरीर की स्थिति बिगड़ने लग गई थी तभी अपनी वसीयत बाबू अमरदास वकील को लिखवा दी जिसके अनुसार अपने आभूषण जिसकी लागत 800/- रुपये थी और 400/- रुपये नकद अपनी सास को दे दिया जाये। सन्दूक में कुछ रेशमी कपड़े और 48 रुपये नकद एक अनाथ बालिका को दे दिया जाये जिसका विवाह होने वाला था। शेष राशि लेखराम निधि को दी जाये। कुछ समय की रुग्णता के पश्चात् 3 जुलाई 1902 को उनके प्राणपखेरू उड़ गये। प्राण छूटने से पूर्व अपना सर्वस्व दान कर दिया और अन्तिम श्वास ऐसा सोचते हुए छोड़ा, **''ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा''**। मानो अन्तिम समय यह कह रही हों—

मेरा इसमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझ को सौंपते, का लागे है मेरा॥

चलती गाड़ी से छलांग लगा दी-पण्डित लेखराम जी के गौरवपूर्ण बलिदान पर आर्यों को अभिमान है। जितनी शानदार उनकी मृत्यु थी उससे कहीं अधिक शानदार उनका जीवन था। उन्हें सूचना मिली कि दोराहा (चावा पायल) ग्राम में कुछ हिन्दू मुसलमान बनने जा रहे हैं। उन्होंने झट से बिस्तर बांधा और लाहौर से चल पड़े। दोराहा (चावा पायल) स्टेशन पर टिकट लिया और गाड़ी में सवार हो गये। जब दोराहा (चावा पायल) स्टेशन आने लगा तो पण्डित जी अपना सामान बांधने लगे। साथ वाले यात्रियों ने कहा कि यह गाड़ी इस स्टेशन पर नहीं रुकती। आप गलती से एक्सप्रेस गाड़ी में आ गये हैं। गाड़ी रुके न रुके परन्तु धर्म के धुनी लेखराम का निश्चय अटल था। पण्डित जी ने बड़ी सावधानी से बिस्तर छाती से लगाकर चलती गाड़ी से कूद गये। चलती गाड़ी से कूदने पर शरीर से रक्त बहने लगा, कपड़े भी फट गये परन्तु उन भाइयों से जो मुसलमान बनना चाह रहे थे, सम्पर्क किया। वे पण्डित जी से लहू से लतपथ देखकर दंग रह गये। कारण पूछा, पण्डित जी ने संक्षेप से अपनी गाड़ी छूटने की घटना सुना

दी। उन लोगों के मन में यह विचार आया कि जब इन्होंने हमारे लिए जान की बाजी लगा दी है तो हम क्यों अपने धर्म से गिरें। वे बहुत प्रभावित हुए। एक भी व्यक्ति धर्मच्युत नहीं हुआ।

पुत्र के रोगग्रस्त होने की भी चिन्ता नहीं-18 मई 1895 के दिन पण्डित जी को एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र का नाम सुखदेव रखा गया। अब पण्डित जी अपनी पत्नी लक्ष्मी देवी और पुत्र सुखदेव को भी वार्षिकोत्सव में ले जाने लगे थे। मथुरा के उत्सव पर सुखदेव रोगग्रस्त हो गया। पण्डित जी रोगग्रस्त पुत्र को जालन्धर छोड़कर शिमला के वार्षिकोत्सव पर चले गये तथा 26 अगस्त को जालन्धर वापिस आ गये। जालन्धर में 28 अगस्त 1896 को सवा वर्ष की आयु में उनके पुत्र का निधन हो गया। शोक में डूबी पत्नी को पण्डित जी घर छोड़कर दो दिन में ही पूर्ववत् प्रचार में लग गये। पुत्र की मृत्यु से दो दिन पूर्व शिमला में थे। दो दिन पश्चात् पत्नी को घर पहुंचाकर वजीराबाद के वार्षिकोत्सव में चले गये। ऐसा धीरज और इतना अटल ईश्वर विश्वास सबमें नहीं हो सकता परन्तु जातियों, राष्ट्रों व संस्थाओं का इतिहास ऐसी-ऐसी घटनाओं से बना करता है।

इस घटना से सम्बन्धित एक बात इतिहास केसरी प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने स्पष्ट की है—''इस सम्बन्ध में यह लिखना आवश्यक है कि पण्डित जी की मृत्यु के बारे में लिफाफे वाली एक प्रसिद्ध कविता से यह भ्रम फैल गया है कि पण्डित जी के पुत्र सुखदेव के निधन के समय पण्डित जी प्रचार यात्रा पर थे। यह बात गलत है। पण्डित जी पुत्र के निधन से पूर्व व तुरन्त बाद भी प्रचार यात्रा के लिए निकल पड़े थे, परन्तु मृत्यु उनके सामने ही हुई थी। इस विषय में मैं पहले ही कई प्रमाण अपनी पुस्तकों में दे चुका हूँ। कुछ भी इकलौते पुत्र की मृत्यु के पश्चात् अपनी पत्नी को घर पर छोड़कर धर्म-प्रचार व जाति रक्षा के लिए निकल पड़ना कोई साधारण-सी बात तो है नहीं। पण्डित जी के त्याग व बलिदान की महत्ता को हम अनुभव तो कर सकते हैं, परन्तु शब्दों में वर्णित नहीं कर सकते।'' कवि हृदय श्री उत्तमचन्द जी ने लेखराम जी के इस मोह में न पड़ने पर यह पंक्तियां लिखीं थीं जो उनके सम्बन्ध में इस बात को दर्शाती है कि वह महामानव ममता पर किस प्रकार जीत प्राप्त कर गया था— क्रमशः.....

वाणी का महत्त्व

ज=जायते, ग=गच्छति, त=स्थीयते अर्थात् ज+ग+त=जगत्। इस जगत का कारण हम देखते हैं तो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश ये पांच तत्त्व सामने आते हैं जिनको पांच महाभूत भी कहते हैं। इन पांचों महाभूतों का सार देखा जाये तो पृथ्वी ही मानी जाएगी तो पृथ्वी का सार क्या होगा? उत्तर स्पष्ट है वनस्पतियां, औषधियां आदि। अब देखते हैं वनस्पतियों और औषधियों का सार क्या है? इनका सार है--'रस', क्योंकि इनको हम सब खाते हैं, तो रस का सार क्या होगा? 'रक्त' इस रक्त का सार क्या होगा? 'मांस' (गोस्त) होता है, मांस का सार 'मेद' (चर्बी) होता है। मेद का सार 'हड्डी' होती है। हड्डी का सार 'मज्जा' होती है तथा मज्जा का सार 'वीर्य' होता है। इस वीर्य से ही मनुष्य पैदा होते हैं। मनुष्य का सार ढूंढ़ा जाये तो 'वाणी' और वाणी का सार सत्य, हितकारी, प्रिय, इस प्रकार वाणी ही सम्पूर्ण जगत् का सार होती है। तभी तो कहा है—

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

जो जितनी सारवान् (मूल्यवान्) वस्तु होती है, समझदार मनुष्य उसका प्रयोग उतना ही सतर्क एवं सावधान होकर करता है। जैसा होता है पानी, वैसी ही हो जाए वाणी। पानी कैसा होता है? पानी शान्त है, पानी मधुर है, पानी पवित्र है, पानी दवा भी है। शरीर से नंगा संत, वाणी से नंगा बदमाश। वाणी से नंगा क्रोध करता है। क्रोध सबसे पहले मन में पैदा होता है फिर मुख से गुजरता हुआ वाणी में आता है, इसलिए वाणी को संयम में रखने वाला महान् होता है तथा सम्पूर्ण ज+ग+त का सार वाणी ही होती है।

—श्रीओ३म् आर्य, झज्जर, 9416662447

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज लोहारू (भिवानी)	29 से 30 अप्रैल 2017
2.	आर्यसमाज सिहोर (महेन्द्रगढ़)	13 से 14 मई 2017
3.	आर्यसमाज भुरथला (रेवाड़ी)	13 से 14 मई 2017
4.	आर्यसमाज जाडरा (रेवाड़ी)	27 से 28 मई 2017
5.	भगवती आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, जसात (गुड़गांव)	18 मई से 4 जून 2017

—आचार्य कर्मवीर, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य

❑ डॉ० महेश विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द का स्वप्न और उद्देश्य था—देश-देशान्तरों में सर्वत्र वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृति के उज्वल पक्ष का प्रचार एवं प्रसार हो। महाभारत के पश्चात् ऋषि निराले महापुरुष थे, जिन्होंने देश को स्वत्व, स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति, स्वभाषा आदि बोध कराया। उन्होंने वैचारिक समग्र क्रान्ति का शंखनाद किया। वैदिक धर्म की जगह नाना पंथों, सम्प्रदायों, ईश्वर की जगह अनेक देवी-देवताओं तथा गुरुओं की पूजा हो रही थी। चारों ओर घोर अज्ञान, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास आदि फैला हुआ था। ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने समस्त अवैदिक मिथ्या बातों को मिटाने तथा हटाने के लिए क्रान्तिकारी विचारधारा की ज्वाला प्रज्वलित की जो **आर्यसमाज** कहलाया। आर्यसमाज कोई पंथ, सम्प्रदाय व गद्दी नहीं है। इसके सभी मन्तव्य, आदर्श तथा मान्यताएं सार्वजनिक व्यावहारिक, वैज्ञानिक तर्क, युक्ति आदि पर आधारित हैं।

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की विचारधारा, सिद्धान्तों, आदर्शों, विरासत और वसीयत का उत्तराधिकारी है। जिन उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति के लिए ऋषि ने अनेक बार जहर पिया। पत्थर खाए, अपमान सहा, गालियां सुनीं, सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए आहुत कर दिया। ऐसे महामानव का जीवन्त स्मारक आर्यसमाज है। सच है कि आर्यसमाज की स्थापना के बाद स्वामी जी को बहुत थोड़ा समय मिला। वे असमय में हमसे विदा हो गए। ऋषि के व्यक्तित्व एव कृतित्व से प्रभावित पागल दीवाने, जुनून वाले अनुयायियों ने अपना घर-बार, जवानी और सर्वस्व देकर, आर्यसमाज को राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सुधारक आदि क्षेत्रों में बुलन्दियों पर पहुँचा दिया। आर्यसमाज के आरम्भिक काल के लोगों में तप, त्याग, सेवा, आदर्श, बलिदान, ऋषिभक्ति आदि के प्रेरक प्रसंग तथा उदाहरण पढ़ते और सुनते हैं तो हृदय श्रद्धाभक्ति व भावना से नत हो उठता है। भावविभोर होकर आंखें छलकने लगती हैं। आह! आर्यसमाज का अतीत, कितना स्वर्णिम, गौरवपूर्ण, प्रेरक तथा आकर्षक था। चारों ओर ऋषि दयानन्द का चुम्बकीय आकर्षण तथा जादू सबके सिर पर चढ़कर बोल रहा था। अतीत का जितना भी गुणगान करें, थोड़ा है। वर्तमान पर जितनी चिन्ता और प्रश्नचिह्न लगाएं, वे भी थोड़े हैं।

मुख्य कार्य वेदप्रचार-आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेदप्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्रनिर्माण तथा सत्यधर्म का प्रचार करना है। वेदप्रचार आर्यसमाज का नाम धरोहर तथा वसीयत है। वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्ताक है और कोई विचारधारा नहीं मानती है। वेद मन्दिर, वेदकथा, वेदसम्मेलन तथा प्रातः पवित्र वेदमन्त्रों के द्वारा सुन्दर विधि-विधानयुक्त यज्ञ होता हुआ और कहीं नहीं मिलेगा। वेद सबके हैं, सबके लिए हैं और सबको पढ़ने-सुनने का अधिकार है। नारी वेद पढ़ सकती हैं, पढ़ा सकती हैं। यज्ञ की ब्रह्मा बन सकती हैं। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश तथा संदेश है। आज दुनिया में ९८ प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिन्होंने न वेद देखे हैं, न पढ़े हैं, न सुने हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदोद्धार के लिए आर्यसमाज बनाया था। वेदज्ञान ही संसार को मानवता और जीवन जगत् का सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकता है। वेद का चिन्तन व सन्देश सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक तथा सार्वदेशिक है। यदि भूले-भटके संसार को कोई सुख-शान्ति एवं आनन्द का सच्चा मार्ग दिखा सकता है तो केवलमात्र वह वेदमार्ग है।

आज आर्यसमाज का असली काम छूट रहा है। ये सभा, संगठन, संस्थाएं, स्कूल, डी.ए.वी. आदि आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार मानव निर्माण तथा वेदप्रचार के लिए बनाए गए थे। जहां व्यक्ति को संस्कार-विचार और चरित्र निर्माण की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। आज समाज मन्दिरों में वेदाध्ययन शालाएं कोई नहीं खोल रहा है। वेदप्रचार घट रहा है। इससे जनता से सम्पर्क कट रहा है। जबसे सम्पत्तियां, स्कूल, दुकानें, एफ.डी. आदि की आमदनी की बढ़ी है तब से विवाद, संघर्ष तथा पदलोलुपता आदि अधिक बढ़ रही है। कथनी और करनी में अन्तर बहुत तेजी से बढ़ा है। जो आर्यसमाज कभी सत्य, ईमानदारी और विश्वसनीयता के लिए उदाहरण बनता था। वैसी पहचान आज हमारी नहीं बन पा रही है।

असम्प्रज्ञात समाधि तक जितने विषय आएं, उनको भूलकर ईश्वर में ही मग्न रहना चित्तवृत्ति निरोध है।

आर्यसमाज का उदय, झूठ, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि के विरोध के लिए हुआ। इसका नारा था- जागते रहो! जागते रहो! इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज ने ढोंग, अन्धश्रद्धा तथा गलत बातों का सदा विरोध किया है। आज संसार में बड़ी तेजी से मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, गुरुमहन्त आदि तेजी से फल-फूल व बढ़ रहे हैं। कोई विचारधारा वाला इन गलत बातों का खण्डन नहीं कर रहा है। क्योंकि सभी ने अपनी दुकानदारी, पुजापा, चढ़ावा आदि चलाना है। केवलमात्र आर्यसमाज एक ऐसा संगठन है जो मिथ्या बातों का शुरू से विरोध करता रहा है। यदि आर्यसमाज भी समझौतावादी और सनातनी बन गया तो इन ढोंगियों, पाखण्डियों, स्वयंभू गुरुओं, महन्तों, महाराजाओं आदि से धर्म भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर भोली-भाली जनता को लूटने से कौन बचाएगा?

प्रतिवर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस हमें जगाने और सम्भालने आता है। जिस उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं प्राप्ति के लिए संस्था का निर्माण किया गया था। उस दिशा में क्या खोया और क्या पाया है, कितना हम आगे बढ़े हैं। नहीं बढ़े हैं, तो क्या कारण रहे हैं, जिससे हम उद्देश्य की दिशा में पिछड़ रहे हैं। उन बातों का चिन्तन एवं मनन करना चाहिये। वर्तमान आर्यसमाज की त्रासदी एवं विडम्बना है कि जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है। जो नहीं होना चाहिए वह तेजी से हो रहा है। जिन बातों का ऋषि ने निषेध किया था, वे ही बातें अधिकांश में हो रही हैं। सभा, संगठन, संस्थाओं आदि की मीटिंगों में वैदिक धर्म की रक्षा, ऋषि सिद्धान्त, मिशन, वेद प्रचार आदि की पीड़ा, चिन्ता व बेचैनी कहीं नजर नहीं आती। व्यर्थ के विवादों, झगड़ों, समस्याओं आदि में समय, शक्ति व धन व्यय हो रहा है। ऋषि ने एक स्थान पर कहा था-'यदि आयंसमाज अपने उद्देश्य को लेकर न चला, तो वह भी एक सम्प्रदाय बनकर रह जाएगा और सब गड़बड़ाध्याय हो जाएगा, सत्य में यही हो रहा है।'

आर्यसमाज स्थापना दिवस हमें प्रेरित कर रहा है। आर्यो! उठो! जागो! अपने को संभालो! कुछ बनो और कुछ करो। दुनिया हमारी ओर देख रही है। आर्यसमाज जैसी मातृसंस्था और ऋषि जैसा मार्गदर्शक और कहीं न मिलेगा। **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** से पहले **'कृण्वन्तो स्वयमार्यम्'** को चरितार्थ कर लें, तो निश्चित रूप से स्थापना दिवस का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा। हम सच्चाई तथा ईमानदारी से संकल्प और व्रत लें-**'इदं आर्यसमाजाय इदं न मम'**। आर्यसमाज में सेवा, त्याग, नियम, सिद्धान्त तथा अनुशासन का निर्वाह व पालन करेंगे। यही आर्यसमाज स्थापना दिवस का सन्देश है।

राम बनो असुरों को मारो

जो मानव संसार में, करते अच्छे काम।
वे कर जाते हैं अमर, अपना प्यारा नाम॥
अपना प्यारा नाम, धन्य है उनका जीवन।
करते गुणगान जगत में, उनका सज्जन॥
देवपुरुष श्रीराम, वेद मर्यादा पालक।
मान रहा संसार, राम थे योद्धा लायक॥ 2॥

मात-पिता के भक्त थे, गुरु के शिष्य महान्।
दुःखीजनों के थे सखा, ऋषियों के थे प्राण॥
ऋषियों के थे प्राण, तपस्वी और परोपकारी।
ईश्वर भक्त महान्, गुणी भारी बलधारी॥
बाली रावण कुम्भकर्ण थे अत्याचारी।
जिनसे थी भयभीत, विश्व की प्रजा सारी॥ 2॥

धर्म जान श्रीराम ने, मारे थे शैतान।
रघुनन्दन श्रीराम को, था वेदों का ज्ञान॥
था वेदों का ज्ञान, निराले थे नरबंका।
सकल विश्व में बजा राम की जय का डंका॥
अगर राम की बात मानते, भारतवासी।
सब हो सुखी, न रहती कहीं उदासी॥ 3॥

भारत में अब बढ़ गये, पापी डाकू चोर।
आतंकवादी कर रहे, जुल्म रात-दिन घोर॥
जुल्म रात-दिन घोर, धर्म को है बिसराया।
रावण के हैं भक्त, फकत है प्यारी माया॥
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जाएगा।
हम सबको नादान, जगत फिर बतलाएगा॥ 4॥

भारतवीरो! कमर कस, हो जाओ तैयार।
क्या थे हम क्या हो गए, इस पर करो विचार॥
इस पर करो विचार, जवानों जोश दिखाओ।
बन जाओ श्रीराम, पापियों के गढ़ ढाओ॥
करो धर्म के काम, अमर जग में हो जाओ।
'नन्दलाल' कह दुष्टजनों का वंश मिटाओ॥ 5॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक,
आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल मो० 9813845774

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में मासिक सत्संग

सत्संग में उमड़ा जनसमुह।

सुशील आर्य भजन प्रस्तुत करते हुए।

मा० रामपाल आर्य सम्बोधित करते हुए।

सत्संग के मुख्य वक्ता आचार्य प्रमोद योगार्थी।

आचार्य प्रमोद योगार्थी को सम्मानित करते हुए।

सिरसा वेद प्रचार मण्डल द्वारा निकाली गई वेद प्रचार यात्रा की झलकी।

सहनशील बाधाओं से डगमग हुए बिना ही सफलता की ओर बढ़ते हैं।

गोरक्षक चिन्तन शिविर की झलकियां

गोरक्षक चिन्तन शिविर में गोभक्तों को सम्मानित करते हुए गोसेवा आयोग के चेयरमैन व आचार्य योगेन्द्र आर्य

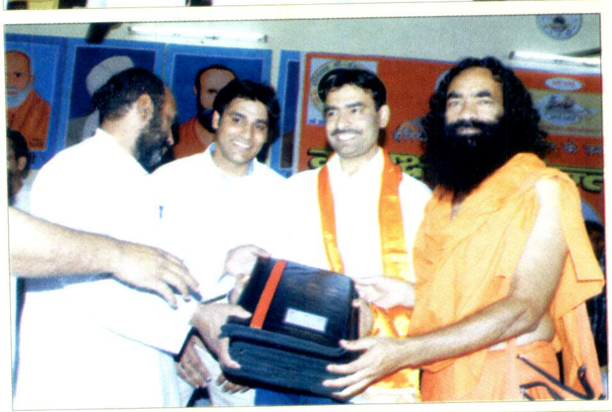

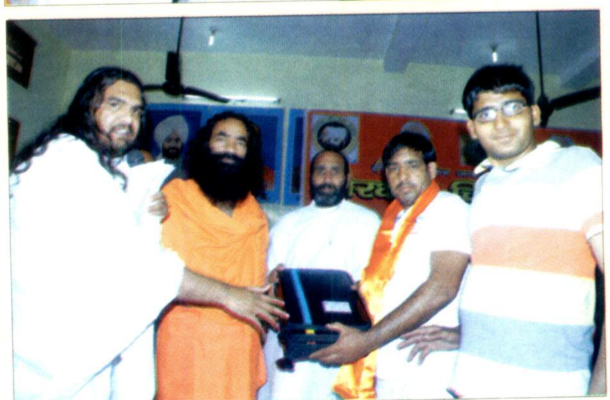

हताशा-निराशा को छोड़ जोश , उत्साह, उमंग के साथ लक्ष्य प्राप्ति में तत्पर लोग सफलता पाते हैं।

ओ३म्

सांख्य दर्शन का अध्यापन

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक में विगत लगभग देढ़ वर्ष से नियमित रूप से प्रातः यज्ञ, वेदपाठ, वेद प्रवचन, कक्षा के रूप में क्रियात्मक योग, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश,स्थूल रुपेण योगदर्शन, सांख्यदर्शन व सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्यापन कराया जा रहा है। आगे वैशाख कृ. 06/2074 तदनुसार 17 अप्रैल 2017 से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक के द्वारा स्वामी ब्रह्ममुनि जी कृत संस्कृत भाष्य सहित सांख्य दर्शन का अध्यापन कराया जायोगा। स्वस्थ, समर्थ, अनुशासनप्रिय, विद्या इच्छुक विद्यार्थी तथा नवीन विद्यार्थी प्रवेश के लिए निवेदन व संपर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता

केवल ब्रह्मचारी (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष से अधिक हो।

शैक्षणिक योग्यता

न्यूनतम 12 वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता)

विशेषताएं

वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ साथ 11 उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेद भाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक वैराग्य, मनोनियंत्रण, यम नियम, ध्यान-समाधि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए 4-5 घंटे मौन पालन का अवसर रहेगा।

सुविधाएं

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपातरहित आवास-भोजन, बिस्तर-वस्त्र, घी-दूध, फल-पुस्तकादि, वस्तुवें निःशुल्क प्राप्त होंगी।

सम्पर्क हेतु पता

आचार्य जी,

दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक (हरियाणा) 124001

चलभाष -

आचार्य नवानन्द जी आर्य - 7027026175, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक - 7027026176, श्री निगम मुनि जी - 9355674547

आर्यसमाज के लिए समर्पित आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक दिवंगत

❑ डॉ० सुरेन्द्रकुमार

संसार में सभी बालकों का जन्म एवं पालन-पोषण सांसारिक वातावरण में हुआ करता है। उनमें से कुछ बिरले बालक और युवा ऐसे होते हैं जो पूर्वजन्मों के संस्कारों के कारण सांसारिक मार्ग को त्यागकर समाजसेवा के मार्ग को ग्रहण कर लेते हैं। श्री सत्यानन्द नैष्ठिक ऐसे ही मार्ग के अनुयायी जनों में से एक हैं। इनका जन्म गाँव के एक किसान परिवार में हुआ जिसका परम्परागत कार्य ही था कृषि और पशुपालन करना। उस समय गाँवों में न विद्यालयों की सुविधा थी और न शिक्षा का प्रचार-प्रसार। स्वाभाविक था कि अभिभावक अपने बालकों परम्परागत पारिवारिक कार्यों में लगा देते थे। समझ आने पर बाल्यावस्था में ही इनको कृषि और पशु चराने के कार्य में लगा दिया। इसी कार्य को करते हुए इनकी बाल्यावस्था, किशोर अवस्था और आधी युवावस्था बीत गई। आर्यसमाज की संगति से इनको एक दिन बोध हुआ कि यह जीवन पशुओं जैसा है, यदि इसको मानव जीवन बनाना है और आगामी जन्मों को सफल करना है तो इस अशिक्षित जीवन को छोड़कर शिक्षा अर्जित करनी होगी तथा आध्यात्मिक मार्ग पर चलना होगा।

यह बोध होते ही ये घर-बार, सगे-सम्बन्धियों को छोड़कर निकल पड़े और सच्चे भाव से ऐसे निकले कि कभी उधर मुड़कर भी नहीं देखा। न घर से कोई ममत्व रखा, न घर के सदस्यों से। कुछ लोग गृह त्याग करके भी गृह और सम्बन्धियों के मेलजोल में फँसे रहते हैं किन्तु श्री सत्यानन्द जी न कभी परिवार से सम्बन्ध रखा, न किसी से कभी चर्चा की, न कभी किसी से सम्पर्क बनाया। ईमानदारी से गृहत्यागी रहे, शिक्षा प्राप्त की और साहित्य के माध्यम से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में संलग्न हो गये और सारा जीवन तथा तन-मन-धन इसी लक्ष्य में समर्पित कर दिया। आपने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की हुई थी।

जब किसी के जीवन का परिचय देना होता है तो अन्वेषक जन उसके मूल वंश और जन्म स्थान का अन्वेषण कर ही लेते हैं और पूर्ण परिचय के लिए ऐसा करना आवश्यक भी है। नहीं तो जीवन को प्रगति का ज्ञान नहीं होता। जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ कि इनका जन्म हरियाणा प्रान्त के गांव कत्तलहेड़ी (जिला करनाल) में सात जुलाई 1937 को हुआ। इनके पिताश्री का नाम श्री रिखीराम और माताश्री का नाम श्रीमती सिंगारी देवी है। आपके तीन भाई दो बहनें हैं। शिक्षा प्राप्ति की रुचि जागृत होने पर उसकी प्राप्ति के लिए 1965 में घर छोड़कर आप पहले गुरुकुल घरोंडा (जिला करनाल) चले आये। उस समय आपकी अवस्था अट्ठाईस वर्ष की थी। इतनी बड़ी अवस्था में अध्ययन करना सरल कार्य नहीं था। आपने उसके लिए कठोर श्रम किया। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल सिंहपुरा (जिला रोहतक) में आकर प्राप्त की। फिर महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में कई वर्ष तक अध्ययन किया और यहाँ से 'व्याकरणाचार्य' परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से वेद तथा संस्कृत साहित्य में एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्ययन का क्रम यहीं समाप्त नहीं हुआ। इसके बाद इलाहाबाद से 'आयुर्वेदरत्न' तथा महाविद्यालय ज्वालापुर से 'योगाचार्य' की उपाधि प्राप्त की। बड़ी अवस्था में अध्ययन आरम्भ करके इतनी परीक्षाएं उत्तीर्ण करना आपके पुरुषार्थ को प्रकट करता है।

अध्ययन के उपरान्त कुछ वर्षों तक घूम-घूमकर आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करने में आपने यथाशक्ति प्रयत्न किया। तत्पश्चात् आपने साहित्य प्रकाशन के माध्यम से प्रचार करने का विचार किया और साहित्य के प्रकाशन के लिए '**सत्यधर्म प्रकाशन**' नामक संस्थान प्रारम्भ किया। इस प्रकाशन के अन्तर्गत आपने आर्य साहित्य, वैदिक विद्वानों द्वारा लिखित सम्प्रति अनुपलब्ध शोधग्रन्थ, क्रान्तिकारी साहित्य, धार्मिक, आयुर्वेद, जीवन चरित आदि अनेक विधाओं के डेढ़ सौ से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन करके पाठकों को उपलब्ध कराया है। प्रकाशन के क्षेत्र में आपने अल्पकाल में ऊँचे मानदण्ड स्थापित किये और ख्याति प्राप्त की। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आर्य साहित्य के क्षेत्र में सुन्दर आकर्षक साज-सज्जा के साथ अत्युत्तम कागज पर प्रकाशन करने की नींव आपने ही स्थापित की। उसके बाद ही अन्यान्य प्रकाशकों ने उच्च स्तर का प्रकाशन प्रारम्भ किया। पुस्तक प्रकाशन का कार्य स्वलिखित एक पुस्तक से आरम्भ हुआ और विस्तृत होते-होते वह एक बृहत् प्रकाशन के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। पाठकों को आपने प्रेरणादायक साहित्य प्रदान किया तो उन्होंने आप द्वारा प्रकाशित साहित्य में रुचि प्रदर्शित की। इस प्रकाशन का कार्य दिनोंदिन बढ़ता गया।

पुस्तक प्रकाशन के साथ-साथ आपने अपना एक पुस्तकालय भी संग्रहीत किया जिसमें प्राचीन दुर्लभ वैदिक शास्त्रों के साथ उपयोगी साहित्य का संग्रह था। उसकी

पुरुषार्थ के उपरान्त असफल होने पर उसके कारणों को ढूंढ़ना चाहिए।

सहायता लेकर दर्जनों छात्रों ने अपना शोधकार्य सम्पन्न किया। अन्ततः उस साहित्य को आपने गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा पतञ्जलि योग विश्वविद्यालय हरिद्वार को प्रदान कर दिया।

प्रकाशन द्वारा आर्य साहित्य के प्रचार-प्रसार के लक्ष्य के साथ-साथ आपने स्वरचित पुस्तकों के लेखन का कार्य भी आरम्भ कर दिया। वे सभी आबालवृद्ध नर-नारी के लिए समान रूप से प्रेरणादायक एवं व्यवहारोपयोगी हैं। पाठकों ने उन्हें इतना पसन्द किया कि सभी के कई-कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। उनमें से कुछ पुस्तकों के नाम उल्लेखनीय हैं—वैदिक नित्यकर्म एवं पंचमहायज्ञ विधि, भारतीय देशभक्तों के कारावास और बलिदान की कहानी, दो बहनों की धार्मिक बातें, सर्वनाश मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है : शराब, भजन संगीत सागर (दो भाग), प्रेरक बोध कथाएं, शिक्षाप्रद कथाएं, उत्तम शिक्षा की अच्छी-अच्छी कहानियां, भारत की आदर्श वीरांगनाएं, जीवन निर्माण की ऐतिहासिक कहानियां, अकाल मृत्यु विवेचन, आर्य नेताओं के व्याख्यान आदि। इस प्रकार एक दर्जन से अधिक पुस्तकों का आपने लेखन किया। साहित्य के द्वारा आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए आपको आर्यसमाज के प्रथम श्रेणी के व्यक्तियों में स्मरण किया जाता रहेगा। आपके लिए एक विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि प्रकाशन से जो भी अर्थ लाभ आपको हुआ है वह किसी परिवार या विशेष व्यक्ति को प्राप्त नहीं हुआ अपितु समाज कल्याण में ही व्यय हुआ है।

पिछले कई वर्षों से आपका स्वास्थ्य शिथिल चल रहा था। प्रकाशन के परिश्रम ने उसे और अधिक शिथिल कर दिया। कुछ दिनों से स्वास्थ्यलाभ के लिए आप योगग्राम (हरिद्वार) में प्रविष्ट थे। स्वामी रामदेव ने आपकी उत्तम चिकित्सा के लिए डॉक्टरों को पर्याप्त निर्देश दिये हुए थे। योगग्राम की चिकित्सा से आपको स्वास्थ्यलाभ भी हो रहा था किन्तु तीन पूर्व एकाएक स्वास्थ्य खराब हो गया। आपको आधुनिक चिकित्सा के लिए 'हिमालयन हास्पीटल, देहरादून' में प्रविष्ट कराया गया किन्तु स्थिति निरन्तर बिगड़ती चली गई। वहीं दो अप्रैल 2017 को दोपहर बाद आपने अन्तिम सांस ली। इस प्रकार लगभग 80 वर्ष की आयु में आप संसार को त्याग कर चले गये।

आचार्य सत्यानन्द को सच्चे गृहत्याग, आर्यसमाज के लिए जीवन-समर्पण, उत्तम प्रकाशन, अध्येताओं के सहयोग, ऋषि दयानन्द के परमभक्त और दृढ़ संकल्पी के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा।

संपर्क-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

दुरितों के त्रिविध रूप एवं दुरितों से बचने के उपाय

—सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी

महर्षि मनु द्वारा बताये गये दुर्व्यसन—

(1) मानस दुर्व्यसन—(i) दूसरे पदार्थ में ध्यान करना अथवा उसको लेने की इच्छा करना या चोरी का विचार करना। (ii) मन में दूसरे की उन्नति देखकर अनिष्ट चिन्तन करना। (iii) झूठा अभिमान करना।

(2) वाचिक दुर्व्यसन—(i) कठोर भाषण करना। (ii) मिथ्या भाषण करना। (iii) चुगली करना। (iv) असम्बद्ध बोलना।

(3) शारीरिक दुर्व्यसन—(i) दूसरे की पदार्थों की चोरी करना। (ii) शास्त्र विरुद्ध हिंसा करना। (iii) ब्रह्मचर्य व्रत का भंग करना। यदि इन दस दुर्व्यसनों में से एक भी जीवन में कार्यरत है, तब तक मनुष्य भद्र कल्याण की प्राप्ति नहीं कर सकता। महर्षि मनु ने दुरितों से बचने के निम्नलिखित उपाय बताए हैं—

(1) ख्यापयेन—यदि किसी व्यक्ति से जाने-अनजाने कोई गलत काम हो जाता है तो ख्यापन-सबके सामने अथवा सार्वजनिक रूप से व्यक्ति अपनी गलती को स्वीकार कर लेता है तो उसका मन स्वच्छ हो जाता है और वह सार्वजनिक कथन उसको पुनः उस कार्य को करने से रोक देता है और जो सबके समक्ष दोष को दोष न मानकर उसे छुपाने का प्रयत्न करता है, वह व्यक्ति उस दोष की रक्षा करने से दूषित ही रहता है।

(2) अनुताप—दुरितों से बचने का दूसरा उपाय पश्चात्ताप करना है। जब कोई काम गलत हो जाता है तो उसके प्रति घृणाभाव पैदा हो जाता है। ऐसी स्थिति में जैसे-जैसे व्यक्ति उस दुष्कर्म की निन्दा करता है, वैसे-वैसे वह दुष्कर्म से बच जाता है। इस पश्चात्ताप की अग्नि से दग्ध वह दुष्कर्म फिर से अंकुरित नहीं हो पाता। एतदर्थ मनुस्मृति में कुछ चन्द्रायणादि व्रतों का अनुष्ठान भी लिखा है। ये भी सहायक बन सकते हैं। इस रहस्य को इस प्रकार समझाया गया है। अर्थात् प्रायश्चित्त शब्द में दो शब्द हैं। प्रायः और चित्त। प्रायः का अर्थ तप है और चित्त का अर्थ निश्चय।

(3) तपसा—व्रतों की साधना से। चन्द्रायणादि व्रतों की जो साधना करनी पड़ती है उसका नाम तप है। अर्थात् मन और इन्द्रियों के संयक को परम तप कहा जाता है। एतदर्थ प्राणायाम परम आवश्यक है जैसे कि लिखा है—जैसे अग्नि में तपाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार प्राण निग्रह से इन्द्रियों के दोष नष्ट हो जाते हैं। **क्रमशः....**

असफलता का यदि कारण ज्ञात हो जाये, तो निवारण करना सरल हो जाता है।

महात्मा हंसराज के स्वयंसेवक आर्यवीरों की कहानी

❑ आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता

गतांक से आगे....

12. सन् 1824 में बिहार में विनाशकारी भूचाल आया। भूकम्प ने बिहार के एक हिस्से को बुरी तरह तबाह कर दिया। चारों ओर जो कल तक भवन दिखाई दे रहे थे वह धराशायी हो चुके थे अब केवल खण्डहर ही नजर आते थे। सूचना मिलते ही महात्मा हंसराज जी ने अपने आर्यवीर स्वयंसेवकों को अलग-अलग चार जगह सीतामढ़ी, दरभंगा, मुजफ्फरनगर और बिहार शरीफ जगह पर सहायता केन्द्र खोले। सबसे पहले पानी के कष्ट को दूर किया गया। यद्यपि कुएं बहुत थे लेकिन वे भूचाल के कारण रेत से भर गए थे। आर्यसमाज के स्वयंसेवकों ने ऐसे 500 कुओं को साफ किया जो बड़ा भारी परिश्रम साध्य कार्य था। आर्यवीर सबकी समान रूप से सहायता करते थे। यहाँ एक बात देखने में आई कि सहायता लेकर भी हिन्दू अपने-अपने कार्यों में लग जाते थे और मुस्लिम और ईसाई सहायता करने वालों की जगह-जगह प्रशंसा करते थे।

13. सन् 1936 के अन्त में मध्य भारत के रतलाम, सैलाना, झाबुआ, दोहद आदि क्षेत्रों में भयंकर अकाल पड़ गया। दो साल तक वर्षा की एक बूंद भी नहीं गिरी और सूर्य के भयंकर ताप ने घास-पात को भी सुखा दिया। लोग वृक्षों के पत्तों तक को खाने लगे। ईसाइयों के लिए यह दुर्लभ अवसर था वे तो चाहते हैं कि ऐसा अवसर मिले और वे अपना बहुमत बढ़ायें। महात्मा हंसराज जी को एक पत्र और अखबार की कटिंग मिली जिसमें लिखा था अकाल के कारण 5000 भील प्रतिदिन इसाई हो रहे हैं। तब भीलों की रक्षा के लिए आर्यसमाज ने सहायता केन्द्र खोले और अनाज बांटना शुरू किया। यह कार्य लगभग दो वर्ष तक चलता रहा जो भील इसाई बने थे उनको फिर से शुद्ध कर लिया गया।

14. सन् 1942 में सिन्ध में बड़ा सैलाब आया। खेत, घर, मकान, दुकान, सामान सब पानी में मग्न थे। लाखों नर-नारी त्राहिमाम्-त्राहिमाम् पुकार रहे थे। सहायता की कोई सम्भावना नहीं थी। ऐसे में आर्यसमाज के स्वयंसेवक संकटमोचन के रूप में कार्य कर रहे थे। लोगों को कपड़े, साबुन, मिट्टी का तेल, आटा आदि आवश्यकता की वस्तुएँ बांट रहे थे। पानी की समस्या हो गई, क्योंकि सब कुएं गन्दगी से भर गए। एक कहावत है—अगर लोटे में भांग पड़ी हो तो छानकर पी लें, यदि कुएं में भांग पड़ी हो तो कैसे छानें? लेकिन आर्यसमाज के स्वयंसेवकों ने ऐसे सैकड़ों कुओं को छाना और लोगों की प्यास बुझाई और जिन कुओं में गन्दगी नहीं थी उनमें पोटैशियम (लाल दवाई) डाली गई। जहाँ आवश्यकता थी वहाँ हस्पताल भी खोले गये। गरीब लोगों में कम्बल, रजाइयाँ और दरियाँ बांटी गई।

15. सन् 1947 में भारत आजाद हुआ और इसके बाद भारत-पाक विभाजन हुआ। उस समय भी आर्यसमाज ने हिन्दुओं की बड़ी रक्षा की। आर्य प्रतिनिधि सभा को लाहौर छोड़कर जालन्धर आना पड़ा। गुरुदत्त भवन तो मुसलमानों ने पूरा ही जला डाला जिसमें बहुत मात्रा में महत्त्वपूर्ण एवं अलभ्य पुस्तकें थीं, वह सब जल गई। आर्यसमाज को पता लगा कि सीमा प्रान्त रावलपिण्डी आदि से बहुत से हिन्दू किसी न किसी तरह हरिद्वार पहुंच गये हैं। हरिद्वार स्टेशन के पास एक ठहरने का कैम्प लगा दिया और खान-पान का पूरा इन्तजाम किया गया।

कुछ शरणार्थी आर्यसमाज अमृतसर ठहराए गए। डी.ए.वी. कालेज लाहौर में भी हिन्दुओं की रक्षा का पूरा इन्तजाम था क्योंकि वहाँ फौज और पुलिस का निवास था। फिर जालन्धर में दयानन्द कालेज और साईंदास हाईस्कूल में रक्षा केन्द्र खोले गये, जिनमें हजारों शरणार्थियों की सुरक्षा व्यवस्था एवं खान-पान की व्यवस्था की गई।

भारत के स्वतन्त्र होने तक की कुछ घटनाएं जो दयानन्द के वीर सेनानी महात्मा हंसराज जी के प्रेरणीय जीवन से जुड़ी हैं, वो कहीं हैं, लेकिन आर्यसमाज ने ऐसे अनेक वीरों का निर्माण किया है जिनका इतिहास स्वर्णिम शब्दों में अंकित है जिन्होंने बिना किसी इच्छा के बिना किसी चाह के निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य किया मुझे महाराजा रन्तिदेव का वह भाव याद आता है जो आर्यवीर स्वयंसेवकों में भी पैदा हुआ—न ही मुझे किसी राज्य की आवश्यकता है, न मुझे सुखों से भरा हुआ स्वर्ग चाहिए और न ही मुझे अपनी सेवाओं के बदले अगले श्रेष्ठ जन्म की इच्छा है। हे प्रभु! मेरी तो बस एक ही कामना है वह मेरी इच्छा पूरी करें, प्रभु मैं चाहता हूँ मेरा यह जीवन समस्त प्राणियों के दुःखों को दूर करने में लगे।

नत्वेवाऽहं कामर्य राज्यं, न स्वर्गं न पुनर्भव।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनाम् आर्तनाशनम्॥

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बड़ी सफलता

- रंग लाये सभा के प्रयास।
- गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद की किला नं० 20 (8 कनाल) 19 (8 कनाल) 22 (3 कनाल) कब्जाधारियों से मुक्त करवाया।
- सभा ने दोहराया अपना संकल्प।
- नहीं लुटने देंगे स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपोभूमि को।

मा० रामपाल आर्य सभाप्रधान ने बताया कि ज्यों ही कोर्ट से केस जीता, बिना वक्त गंवाये, तुरन्त कार्यवाही करते हुए कब्जाधारियों से जमीन को अपने कब्जे में दिनांक 10 अप्रैल 2017 को ले लिया।

जारी रहेगी यह कार्यवाही

श्री नरेन्द्र कटारिया सभा के वकील के प्रयासों से ज्यों ही एक अप्रैल 2017 को कोर्ट का निर्णय सभा के हक में आया, तुरन्त नकल निकलवाकर कब्जा लेने पहुँच गए। सभा के अधिकारी जिसमें मा० रामपाल आर्य सभाप्रधान, श्री कन्हैयालाल आर्य सभा उपप्रधान, आचार्य योगेन्द्र आर्य सभामन्त्री, आचार्य सर्वमित्र आर्य सभा प्रस्तोता, आचार्य ऋषिपाल आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद एवं अन्तरंग सदस्य, श्री देशबन्धु आर्य अन्तरंग सदस्य, श्री बलवीर सिंह सदस्य प्रबन्ध समिति, श्री मनोहरलाल आर्य, श्री ओमप्रकाश शास्त्री सभा गणक, श्री राहुल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद गणक, श्री निगम मुनि उर्फ रणवीर बल्हारा, श्री नरेन्द्र सभा-चालक, श्री सन्तराम सभा-चालक, स्कूल स्टाफ के सदस्य आदि शामिल थे।

—रामपाल आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

समाचार-प्रभाग

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

घरौंडा, 22 मार्च दिलबाग : आर्यसमाज घरौंडा का चार दिवसीय वार्षिक उत्सव घरौंडा आर्यसमाज भवन में धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान चारों वेदों के चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन आर्य समाज घरौंडा के पुरोहित रणजीत आर्य की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक आचार्य विष्णुगुप्त ने व प्रसिद्ध भजनोपदेशक संगीता आर्य व जसविन्द्र आर्य ने भाग लेकर लोगों को महर्षि दयानन्द की नीतियों से अवगत कराया। इस दौरान एक दिन की रात्रि सभा का आयोजन घरौंडा के गांव बसताड़ा में आयोजित की गई। इस उत्सव में भारी संख्या में जनसमूह ने भाग लिया। संगीता आर्य व जसविन्द्र आर्य ने पाखंड, अंधविश्वास, सामाजिक बुराइयों के बारे में लोगों को जगाया व हवन यज्ञ और संध्या के लिए प्रेरित किया। इस दौरान कन्या भ्रूणहत्या रोकने को लेकर लोगों को जागरूक किया गया। समारोह में स्थानीय विधायक व प्रदेश के हैफेड चेयरमैन हरविन्द्र कल्याण, हरियाणा के खाद्य आपूर्ति राज्य मंत्री कर्णदेव काम्बोज ने, हरियाणा के पंचायती राज के पूर्व महानिदेशक बी.एस. मलिक ने विशेष रूप से भाग लिया। इस दौरान लोगों ने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जागरूकता लाने का आह्वान किया। इस अवसर पर आर्य समाज घरौंडा के संरक्षक जगदीश आर्य, सुभाष आर्य, प्रधान रणधीर शास्त्री, मंत्री दिलबाग लाठर, कोषाध्यक्ष रमेश राणा, राजेन्द्र फौजी, संजीव वैदिक, सुभाष राणा, शीशपाल, जयप्रकाश सहित अन्य मौजूद रहे।

ओजस ट्रेडिंग पावर कम्पनी का यज्ञ से उद्घाटन

हिसार तोशाम रोड पर नवनिर्मित ओजस ट्रेडिंग पावन कम्पनी का यज्ञ के माध्यम से 30.3.2017 को उद्घाटन किया गया। फैक्ट्री के मालिक कुलदीप सिंह दुहन तथा आजाद सिंह ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के शास्त्री अमित विद्यावाचस्पति यज्ञ के ब्रह्मा थे। शास्त्री जी ने पंच महायज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि स्वामी दयानन्द जी के जीवन व कार्यों पर तथा भारतीय संस्कृति-सभ्यता पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर धूपसिंह पूर्व सरपंच कंवारी, प्रदीप दुहन, राजेश सिहाग, श्रीमती सुनहरी आर्या, भरथो देवी, रवीन्द्र पूनिया के अतिरिक्त दो दर्जन से भी अधिक कर्मचारियों ने भाग लिया। शान्तिपाठ के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, नलवा, हिसार 9466865351

नामकरण संस्कार पर यज्ञ का आयोजन

ग्राम उमरा जिला हिसार में मास्टर दिलबाग के घर पर 18 साल के उपेन्द्र और दो साल के वीर के जन्म दिवस पर यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी थे। आचार्य जी ने सुखी गृहस्थ के पांच आधार बताये तथा संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया व परिवार में समय-समय पर विद्वानों को बुलाकर यज्ञ व वेदप्रचार कराते रहना चाहिए। बच्चों के उत्तम स्वास्थ्य व लम्बी आयु की कामना की। इस अवसर पर मा० दिलबाग आर्य, श्रीमती सन्तोष आर्या, श्रीमती कृष्णा देवी, सुनहरी आर्या, श्रीमती सुमन आर्या, श्रीमती रमन, राजकृष्ण आर्य, सूबेदार हरिसिंह मलिक, दलवीर सिंह आर्य आदि उपस्थित थे।

—ब्रजभान मलिक, एसडीओ, उमरा, जिला हिसार

जन्म दिवस पर यज्ञ का आयोजन

आर्य निवास नलवा (हिसार) में श्री राजबीर आर्य की सुपुत्री उर्मिल आर्या के 21वें जन्म दिवस पर 23 मार्च 2017 को यज्ञ का आयोजन किया गया। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने उर्मिल को आशीर्वाद देते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि उनको लम्बी उम्र व अच्छा स्वास्थ्य दे। यज्ञ पर अन्य आशीर्वाद देने वालों में श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्री राजबीर आर्य, सरोज आर्या, पवन कुमार आर्य, राजपाल खिचड़, संजय दुहन कुंवारी, श्रीमती बिमला आर्या, सरला आर्या आदि उपस्थित थे।

—नरेन्द्र आर्य, मंत्री, आर्यसमाज नलवा (हिसार)

लाला लाजपतराय से प्रभावित थे सरदार भगतसिंह

शहीदाने मेवात सभा हरयागा की देखरेख में दिनांक 23.3.2017 को शहीद सम्मेलन का आयोजन श्री सरफुद्दीन

मेवाती की अध्यक्षता में किया गया जिसका संचालन श्री रामचन्द्र तंवर ने किया। इस अवसर पर पण्डित नन्दलाल निर्भय पत्रकार ने अपने प्रवचन में सरदार भगतसिंह को पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का अनुव्रती बताया। श्री नन्दलाल निर्भय ने स्पष्ट किया कि सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव पर लाला लाजपतराय की महान् त्याग-तपस्या एवं देशभक्ति का बहुत ज्यादा असर था। तभी तो वे तीनों भारत वीर सपूत भारत की आजादी के लिए हँसते हुए फांसी पर झूल गए थे। श्री निर्भय जी ने भारतीय युवकों की ईमानदारी से देश की सेवा करने की प्रेरणा की। इस समारोह में हथीन (मेवात) क्षेत्र के हजारों व्यक्तियों ने भारत की तन-मन-धन से सेवा करने की तथा भारतमाता की जय के नारों से आसमान गुंजा दिया।

आर्यसमाज बरोदा में नवसंवत्सर यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 31 मार्च 2017 को आर्यसमाज बरोदा तहसील गोहाना जिला सोनीपत द्वारा नवसंवत्सर के शुभ अवसर पर गांव बरोदा में उत्सव मनाया गया और वेदप्रचार का सुन्दर कार्यक्रम किया गया। सबसे पहले देवयज्ञ का आयोजन किया जिसके यजमान श्री वीरेन्द्र आर्य सपत्नीक बने तथा सैकड़ों स्कूल के छात्र-छात्राओं ने और गाँववासियों ने बड़े उत्साह से यज्ञ में आहुतियाँ दीं। यज्ञोपरान्त रोहतक से गए श्री कर्णसिंह मोर ने नवसंवत्सर के बारे में विस्तार से बताया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से सृष्टि आरम्भ हुई है। श्री रामचन्द्र का राज्याभिषेक विक्रमी संवत् की शुरुआत, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा मुम्बई में इसी दिन आर्यसमाज की स्थापना की गई। श्री सुरेन्द्र दहिया ने पंच महायज्ञों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और बताया कि यज्ञ का करना प्रत्येक मनुष्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। श्री सुभाष आर्य ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप और उसके मुख्य नाम 'ओ३म्' के बारे में अपने विचार रखे। सभी उपस्थित आर्यों ने बड़े ध्यान और धैर्य से कार्यक्रम को सुना। आर्यसमाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र सिंह प्रिंसिपल ने सबका धन्यवाद किया और प्रीतिभोज करवाया।

—**दयासिंह आर्य,** मन्त्री, आर्यसमाज बरोदा, (सोनीपत)

नवसंवत्सर धूमधाम से मनाया गया

रोहतक। दिनांक 28 मार्च 2017 को आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक में वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास रोहतक के तत्त्वावधान में नव वर्ष (सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118) बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस पावन अवसर पर बड़ा यज्ञ किया गया एवं विशेष मन्त्रों से आहुतियां डाली गईं। इसी दिन के साथ बहुत सारी विशेषताएं जुड़ी हैं। जैसे—(1) इसी दिन ईश्वर ने सृष्टि की रचना की। (2) सम्राट् विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य स्थापित किया और इन्हीं के नाम से विक्रमी संवत् का पहला दिन प्रारम्भ होता है। (3) इसी दिन श्री रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक हुआ। (4) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन आर्यसमाज की स्थापना की। (5) महाभारत काल में युधिष्ठिर का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ आदि अनेक घटनाएं हैं। इस अवसर पर श्री डॉ० कमलेश कुमार शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग, अहमदाबाद विश्वविद्यालय गुजरात मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त मा० रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी आशुतोष जी, दर्शनयोग महाविद्यालय सुन्दरपुर रोहतक, स्वामी धर्मदेव जी कन्या गुरुकुल पिल्लूखेड़ा जिला जीन्द, डॉ० सुरेन्द्र कुमार अध्यक्ष संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, आचार्य सर्वमित्र आर्य प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरियाणा, आचार्य कर्मवीर मेधार्थी सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता आदि विद्वान् उपस्थित थे। इस नववर्ष के उपलक्ष्य में आर्यसमाज सैक्टर-1 रोहतक, स्त्री आर्यसमाज देव कालोनी रोहतक, हाउसिंग बोर्ड, सैक्टर-1, रोहतक, पाड़ा मोहल्ला रोहतक आदि आर्यसमाजों ने पूर्ण रूप से सहयोग दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य ने सभी उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद किया तथा जनसमूह से प्रार्थना की कि इस नव वर्ष की शुभकामनाएं सभी आर्य अपने-अपने परिचितों से वाटशप से जरूर भेजें। इस आयोजन में मुख्य रूप से न्यास के प्रधान श्री रणवीर सिंह बल्हारा उर्फ निगम मुनि एवं श्रीमती अंगूरी देवी उर्फ सुगमा मुनि, श्रीमती सुमन आर्या, श्री रघुवीर सिंह काद्यान, शमशेरसिंह दलाल व अनिल आर्य ने दिन-रात अथक प्रयास करके लोगों से सम्पर्क किया। उन्हीं के प्रयास से लगभग 500 आर्यों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अन्त में कार्यक्रम की समाप्ति पर ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

—श्री रणवीर बल्हारा, प्रधान,
वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास, रोहतक 9355674547

राष्ट्रीय विज्ञान ओलम्पियाड प्रतियोगिता सम्पन्न

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत ने पहली बार 19वें SOF '**राष्ट्रीय विज्ञान ओलम्पियाड**' में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में, इस वर्ष 25 देशों के 42,800 विद्यालयों के हजारों विद्यार्थियों ने भाग लिया। SOF ओलम्पियाड को विश्व का सबसे बड़ा ओलम्पियाड माना जाता है। यह प्रतियोगिता हमारी विज्ञान अध्यापिका विम्मी मल्होत्रा के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई। हमारे विद्यालय के कुल 10 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इन प्रतिभागियों में से दो प्रतिभागियों ने प्रथम स्तर को उत्तीर्ण किया और दूसरे स्तर के लिए चयनित हुए। दूसरे स्तर की परीक्षा में भी इन दोनों प्रतिभागियों ने जोनल और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए वरीयता और प्रमाण-पत्र प्राप्त किये हैं। इन प्रतिभागियों का विवरण इस प्रकार है—

नाम	जोनल स्थान	अन्तर्राष्ट्रीय स्थान
1. स्वीटी मलिक	177	2077
2. यूनिक मलिक	112	1170

हमें, हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों और अध्यापकगण की इस महान् उपलब्धि पर गर्व है।

वेदप्रचार मण्डल फरीदाबाद का गठन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य योगेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार अधिष्ठाता आचार्य कर्मवीर मीमांसक व गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य श्री ऋषिपाल जी की उपस्थिति में जिला फरीदाबाद के आर्यजनों की एक बैठक आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर-15 फरीदाबाद में सम्पन्न हुई। आर्यसमाज के कार्य को और वेदों के प्रचार को गाँव-गाँव व शहर-शहर तक पहुँचाने के बारे में विचार विमर्श किया गया। इसके लिए जिला वेदप्रचार मण्डल के माध्यम से कार्य करने पर निर्णय हुआ। वेदप्रचार अधिष्ठाता आचार्य कर्मवीर जी मीमांसक ने निम्नलिखित अधिकारियों को जिला वेदप्रचार फरीदाबाद के लिए नियुक्त किया—संरक्षक-श्री राजेन्द्र सिंह बीसला, श्री शिवकुमार टुटेजा, श्री ईश्वरसिंह आर्य, प्रधान-श्री होतीलाल आर्य, उपप्रधान-श्री मनमोहन गर्ग, श्री संजय आर्य, मंत्री-श्री रामबीर आर्य प्रभाकर, उपमंत्री-श्री कर्मचन्द शास्त्री, कोषाध्यक्ष-श्री धर्मवीर रावत, प्रैस-प्रवक्ता-श्री नीरज त्यागी।

बृहद् यज्ञ व वेदप्रचार सम्पन्न

दिनांक 23 फरवरी 2017 को वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुर के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने वेदशिक्षा की तरफ इशारा करते हुए कहा बाह्य उन्नति से यूरोप को सुख नहीं मिला। ऋषियों ने आध्यात्मिकता से सुख प्राप्त किया था। समिति के सभी अधिकारियों ने सुन्दर व्यवसथा की थी। -**ईश्वरसिंह आर्य**

शोक-सन्देश

आर्यसमाज बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ के पुस्तकालय के प्रांगण में महात्मा विश्वमुनि संरक्षक वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ के सान्निध्य में शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्यसमाज खेड़की के कोषाध्यक्ष सूबेसिंह के हृदयगति रुकने से आकस्मिक निधन पर एक मिनट का मौन रखा गया। महात्मा विश्वमुनि ने कहा कि सूबेसिंह सच्चे कर्मठ कर्मयोगी थे, आजीवन कोषाध्यक्ष पद पर रहे जिनकी क्षति समाज के लिए अपूरणीय है। दिवंगत आत्मा को शान्ति देने के लिए भगवान से प्रार्थना कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बैठक में सुरेन्द्र प्रधान, उपप्रधान वीरेन्द्र आर्य, मन्त्री सुरेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष जगदीश, सहसचिव कृष्णकुमार, संयोजक बिसनलाल, राजेन्द्र पुस्तकाध्यक्ष ताराचन्द, मधु, मुनी, मनोज, सतनारायण आर्य, मिथुन बागड़ी, अनिल राजाराम सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

—**वीरेन्द्र आर्य, उपप्रधान बाछौद जिला महेन्द्रगढ़**

जिला हिसार में वेदप्रचार जोरों पर

ओजस ट्रेडिंग पावर कम्पनी हिसार तोशाम रोड पर यज्ञ के माध्यम से 30.3.17 को उद्घाटन किया गया। फैक्ट्री के मालिक कुलदीप सिंह दुहन तथा आजाद सिंह यजमान का स्थान ग्रहण किया। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के शास्त्री अमित विद्यावाचस्पति यज्ञ के ब्रह्मा थे। शास्त्री जी ने पंचमहायज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन व कार्यों पर तथा भारतीय संस्कृति सभ्यता पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर धूपसिंह पूर्व सरपंच कंवारी, राजेश सिहाग, विजेन्द्र पूनिया आदि के अतिरिक्त 15 कर्मचारी उपस्थित थे।

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

गीता कॉलोनी हिसार में सायंकाल श्री निहालसिंह पूर्व इंस्पेक्टर के जन्मदिवस पर यज्ञ किया गया। इस अवसर

पर आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने उनको आशीर्वाद देते हुए सुखी गृहस्थ के बारे में अपने विचार रखे। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने पंचमहायज्ञ पर प्रकाश डाला।

वाग्वर्धनी सभा का आयोजन

दिनांक 1.4.17 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में वाग्वर्धनी सभा का आयोजन किया गया। प्रात: अमित शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। उन्होंने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप व लाभों पर प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने की। मुख्य वक्ता आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी थे। उन्होंने आत्मा व परमात्मा का विवेचनपूर्वक व्याख्यान दिया। ब्र० राकेश आर्य, ब्र० नरेश कुमार ने ईश्वरभक्ति भजन व उकिल मुर्मु, ब्रह्मचारी अरुण ने अपने प्रभावशाली विचार रखे। स्नेही जी ने भाषण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों से बढ़-चढ़कर भाग लेने व सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया।

विचार-गोष्ठी सम्पन्न

दिनांक 2.4.17 को सायं 4 बजे सिसाय में फार्म हाउस पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी तथा महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही आदि ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, वेदप्रचार को गति देने, पाखण्ड व धार्मिक अंधविश्वास से दूर रहने का आह्वान किया। धर्मपाल कालिरावणा, रविंद्र कालिरावणा आदि उपस्थित थे।

रामनवमी पर्व पर यज्ञ का आयोजन

दिनांक 4.4.17 को आर्य निवास नलवा में महात्मा अत्तरसिंह स्नेही द्वारा रामनवमी पर्व पर यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने रामनवमी पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। यज्ञ पर श्री राजवीर आर्य, श्री भलेराम आर्य, उर्मिल आर्या, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्री राजपाल आदि उपस्थित थे। -रामकुमार आर्य, प्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को योग्य, विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक एवं व्यायाम शिक्षक की शीघ्र आवश्यकता है। इच्छुक अभ्यार्थी शीघ्र ही कार्यालय में आवेदन करें।

सम्पर्क-आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, मो० 8199982222

वेदप्रचार यात्रा सम्पन्न

सिरसा। दिनांक 6.4.17 रामनवमी के उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा (जो सभी धर्म व सामाजिक संस्थानों द्वारा) आयोजित थी। इसमें वेदप्रचार मण्डल सिरसा के प्रधान जगदीश सींवर के नेतृत्व में यज्ञ की झांकी ट्रैक्टर-ट्राली पर सजाकर अद्वितीय रूप से प्रस्तुत किया जिसमें आर्यसमाज, गोशाला संघ, वेदप्रचार मण्डल के अधिकारी सदस्य शामिल थे। प्रधान के पुत्र संदीप सींवर ने अपने ट्रैक्टर के शोभायात्रा का संचालन किया और श्रवण कुमार आर्य, इन्द्रपाल आर्य, मांगेराम आर्य ने भजनों की प्रस्तुति की। इसी प्रकार 6.4.17 को ही स्व० चौ० देवीलाल जी (पूर्व प्रधानमंत्री) की पुण्यतिथि पर विद्यापीठ में अधिकारियों की ओर श्रद्धांजलि सभा की गई। इस अवसर पर सर्वप्रथम पुरोहित राजेन्द्र शास्त्री, श्रवण कुमार आर्य ने वैदिक विधि से बृहद् यज्ञ करवाया। पीद्यापीठ के वीसी श्री विजयकुमार जी यजमान थे। इसके बाद सभी ने स्व० चौ० देवीलाल जी की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किये जिसमें वेदप्रचार मण्डल सिरसा के प्रधान जगदीश सींवर शामिल रहे।

आर्य समाज द्वारा वैदिक पारिचारिक यज्ञ सत्संग अभियान

आर्यसमाज जींद जंक्शन द्वारा नगर में वैदिक पारिवारिक यज्ञ व सत्संग का अभियान प्रारम्भ किया गया है, जिसके बहुत सार्थक परिणाम आ रहे हैं। इस क्रम में हांसी मार्ग स्थित डॉ० शिवप्रकाश व कैथल मार्ग स्थित श्री जगरूप सिंह एडवोकेट के निवास पर यज्ञ किये गये जिनमें सैंकड़ों की संख्या में माताओं बहनों और आर्यजनों ने भाग लिया। इन अवसरों पर शांतिधर्मी के सम्पादक वैदिक विद्वान श्री सहदेव समर्पित ने यज्ञ पर उपस्थित लोगों को प्रेरणा दी कि वे सच्चे धर्म की शिक्षा प्राप्त करने और अपने बच्चों को धार्मिक बनाने के लिये आर्यसमाज से जुड़ें अन्यथा आपकी सन्तानें पाखण्ड और अंधविश्वास में फंस कर नास्तिक या विधर्मी बन जायेंगी। इन अवसरों पर डॉ० शिवप्रकाश सैनी परिवार, विजयपाल आर्य मास्टर, पृथ्वीसिंह मोर, महासिंह आर्य, वेद प्रचार मण्डल के संरक्षक मा० रायसिंह आर्य, प्रा० अमन दीप सिंह तंवर, माता विद्यावती का सहयोग रहा। आगामी एक मास के कार्यक्रम पहले से ही निश्चित कर दिये गए हैं। आर्य परिवारों में वैदिक संस्कारों को प्रसारित करने की यह योजना निरन्तर जारी रखने का संकल्प है। —मा० पृथ्वीसिंह मोर मंत्री

गोरक्षक चिन्तन शिविर में अपने विचार रखते हुए वक्ता

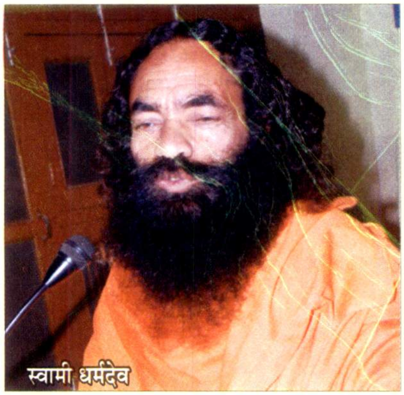
स्वामी धर्मदेव

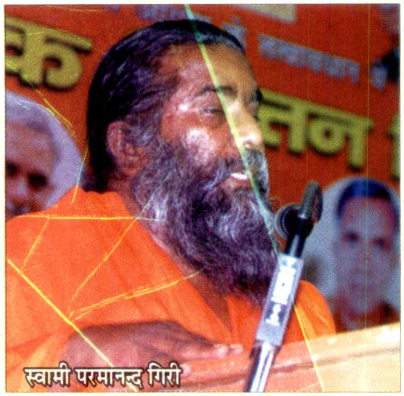
स्वामी परमानन्द गिरी

आचार्य आजाद सिंह (सभा पुस्तकाध्यक्ष)

डा० जगदीश सिंह

श्री उमेद सिंह (सभा उपमंत्री)

श्री इन्द्रजीत सिंह

श्री स्वर्ण गर्ग

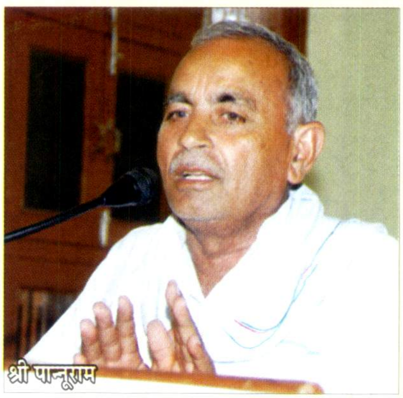
श्री पान्नूराम

वैद्य रमेश शास्त्री

श्री विद्यासागर बाघला

गोभक्त

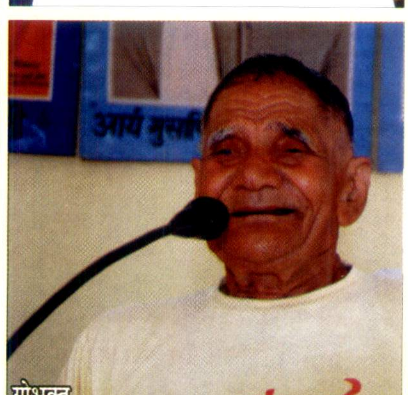
गोभक्त

सफलता के लिए निरंतरता जरुरी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बड़ी सफलता

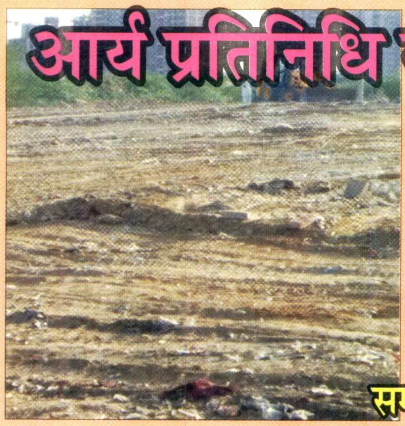
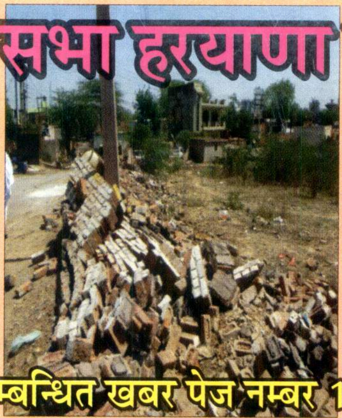
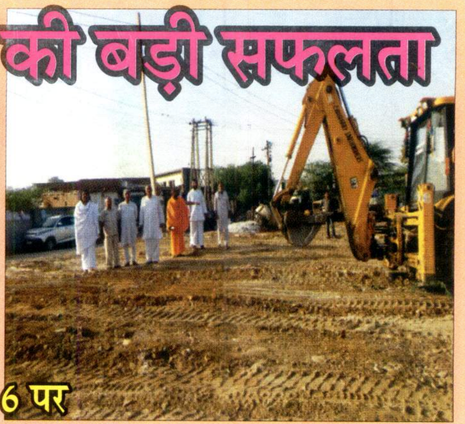

सम्बन्धित खबर पेज नम्बर 16 पर

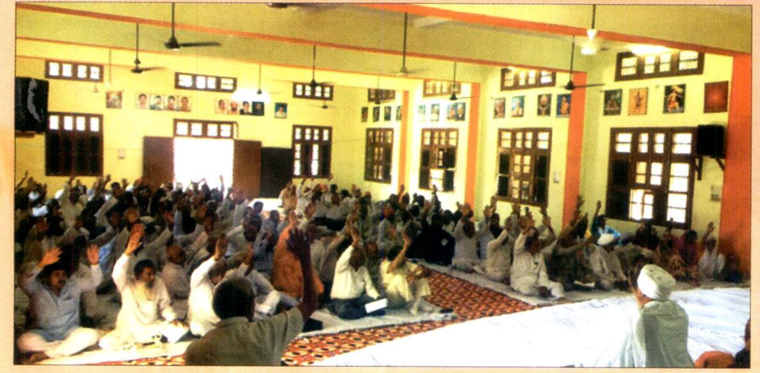

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन 2017 की कुछ झलकीयां

Postal Regn. - RTK/010/2017-19

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक आचार्य योगेन्द्र आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक आचार्य योगेन्द्र आर्य